वैल्हम स्कूल पत्रिका

१९७१ हिन्दी विभाग नं० २९

हमारा भारत देश

उत्तर में है खड़ा हिमालय
दक्षिण में सागर विशाल
पश्चिम में पंजाब का पहरा
पूरब में प्रहरी बंगाल
बोलो वह है किसका देश
मेरा देश हमारा देश
सर पर हिमगिरी का है ताज,
गोद में यमुना गंगा का साज
चरणों में सागर लहराती,
सकल विश्व को है यह भाता
बोलो वह है किसका देश
मेरा देश हमारा देश।

विवेक
१० वर्ष

२

गंगा जी की आत्मकथा

मैं भारतवर्ष की सबसे पवित्र तथा लम्बी नदी हूँ। मेरा जन्म गौमुख में एक छोटी सी खोह से होता है। मैं खोह से जवानी के जोश से भरपूर हृदय-विदारक गर्जना करते हुये अपने पूरे वेग से नीचे भागती हूँ। भागते समय मेरे प्रवाह के बल से विशाल भीमकाय पत्थर भी नष्ट हो जाते हैं।

गौमुख से मैं गंगोत्री पहुँच जाती हूँ। यह समुद्र सतह से कम से कम १०,००० फीट की ऊँचाई पर है तथा सदा हिम के श्वेत वस्त्र धारण किये रहता हैं।

यहाँ से मैं ठिठुरते हुये ऋषिकेश पहुँचती हूँ। ऋषिकेश में मेरे तट पर अनेक आश्रम है जिनमें संसार के भूले-भटके लोगों के मन को शान्ति प्राप्त होती है।

यहाँ के वातावरण को शुद्ध करते हुये मैं हरिद्वार पहुँचती हूँ। हरिद्वार में सहस्त्रों लोग मुझ में स्नान करने आते हैं तथा मेरे पवित्र जल में अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिये पत्तों की बनी नावों पर दिया, फूल तथा नारियल रख कर छोड देते हैं। कई सुहागिन स्त्रियाँ अपने सुहाग की कामना करके मुझमें सुहाग पिटारियाँ छोड़ देती हैं।

हरिद्वार से मैं कानपुर होते हुये इलाहाबाद पहुँच जाती हूँ। यहाँ मेरी दो बहिनें जमुना और सरस्वती भी मुझे सहारा देने को मुझ में समा जाती हैं। हमारा मिलाप देखने को लोग सहस्त्रों की संख्या में आते हैं। इलाहाबाद में मेरे तट पर अनेक मेले लगते हैं। भारत का सबसे बड़ा मेला 'कुम्भ' भी यहीं पर लगता है।

गर्मी से तिलमिलाती हुई मैं यहाँ से बनारस पहुँच जाती हूँ। यह हिन्दुओं का सबसे श्रेष्ठ तीर्थस्थान माना जाता है। यहाँ लाखों लोग मेरे घाट पर स्नान करते हैं फिर मेरे तट पर बने बड़े-बड़े और ऐतिहासिक मन्दिरों में मेरी स्तुति करते हैं तथा सुबह शाम 'हर-हर गंगे' से आकाश गुंजा देते हैं।

यहाँ से मैं गाजीपुर, पटना, मोहनधर तथा भागलपुर से होते हुये बंगाल की खाड़ी में प्रवेश करती हूँ।

प्रशान्त
१० वर्ष

शेर का शिकार

शिकार का मौसम था। मैं और मेरे पिता जी गाड़ी में बैठ कर जंगल की ओर चल पड़े। हमने रात एक छोटे से घर में बिताई। दूसरे दिन नाश्ता करके हम घने जंगल की ओर चल दिये।

रास्ते में हमारी गाड़ी कीचड़ में फंस गई। हमने गाड़ी को वहाँ से निकालने की कोशिश की, मगर सफलता न पा सके। थोड़ी देर बाद हमें उधर से कुछ आदमी गुजरते नजर आये। उन्होंने उस गाड़ी को कीचड़ से निकालने में हमारी मदद की। जब हमारी गाड़ी उस कीचड़ से निकल आई। मेरे पिता जी ने उनसे शेर के विषय में पूछा।

उन्होंने बतलाया कि यहाँ से कुछ दूर एक नीम का पेड़ है, उसके नीचे एक नदी बहती है, वहीं शेर रोज पानी पीने आता है। हम पेड़ की ओर चल दिये। हम वहाँ संध्या के छः बजे पहुँचे। हमने मचान लगाई और उस पर बैठ कर शेर की राह देखने लगे। रात के दस बजे शेर वहाँ पानी पीने आया। मैं तो उसे देख कर इतना डर गया कि पेड़ से ही गिर पड़ा। शेर ने मुझे देख लिया और मेरी ओर आने लगा। मेरे पिता जी ने दो गोलियाँ चलाई, मगर उनमें से एक भी उसे न लगी। मैंने चिल्लाने की कोशिश की मगर मुँह से आवाज न निकली। वह मेरे ऊपर झपटा परन्तु मेरे पिता जी ने इसी बीच उसे गोली से मार दिया। मेरे पिता जी स्वयं घबरा गये थे।

सुनील नवानी
११ वर्ष

चुटकले

बेटा:— पिता जी, राक्षस किसे कहते हैं ?

पिता:— बेटा, जो मनुष्य खाता है।

बेटा:—अगर मैं मम्मी को खा लूँ तो आप मुझे राक्षस कहेंगे।

पिता: —नहीं बेटा, तब तो मैं तुझे परोपकारी कहूँगा।

२. एक बार तीन सरदार रेलगाड़ी मे जा रहे थे। गार्ड ने टिकट मांगा। एक सरदार ऊपर वाली सीट पर, और दो नीचे वाली सीट पर लेटे थे। ऊपर वाले सरदार ने आधा टिकट दे दिया। गार्ड ने कहा--यह तो आधा टिकट है। सरदार ने कहा—देखो मैं ऊपर और दो नीचे इसलिए एक बटा दो। इसलिए आधा टिकट दे रहा हूँ।

३. एक बार एक सरदार जी बम्बई घूमने गये। उन्होंने एक आदमी से पूछा कि बम्बई कैसे घूमा जाये। उसने कहा--जो सड़क पर लिखा हो वही करना। सरदार जी आगे गये, तो लिखा था 'थूकदान' कृपया यहाँ पर थूकिये, सरदार जी ने थूक दिया, आगे गये तो लिखा था रफ्तार ५ कि०मी० वह पाँच कि० मी० की रफ्तार से चलने लगे, ऐसे करते करते उनकी रफ्तार ८० कि०मी० हो गयी। अब तो वह तेज भागने लगे। पुलिस ने हाथ दिया, नहीं रुके, पुलिस ने समझा कोई चोर है। वह उसके पीछे मोटर साईकिल ले कर भागे, जब उसे पकड़ लिया तो पूछा - इतनी तेज कहाँ भागे जा रहे हो। उन्होंने कहा--मैं तो बम्बई घूम रहा हूँ।

४. एक बार एक बुढ़िया ने अपनी बहू से कहा, कि दही को मथती रहो जब मक्खन निकल आये तो मुझे बुला लेना। जब मक्खन निकल गया तो उसने कहा--माँ, मक्खन निकल गया। मक्खनसिंह उस बुढ़िया के पति का नाम था। बुढ़िया ने कहा--ससुर को ऐसे नहीं कहते हैं, दूसरे दिन जब मक्खन निकला तो उसने कहा-- माँ, ससुर जी निकल आये।

राकेश कुमार
१० वर्ष

———

सड़क की बत्ती

मैं कलकत्ते में अपने घर के सामने वाली सड़क की बत्ती हूँ। मैं सबसे पहले देखती हूँ कि मुझे एक आदमी आकर बुझा देता है। उसके बाद मैं देखती हूँ कि एक आदमी दूर से खबर कागज देने आ रहा होता है। उसके थोड़ी देर बाद एक आदमी दूध देने घर-घर में जाता है।

जब सुबह हो जाती है तो लड़कियाँ-लड़के स्कूल जा रहे होते हैं। मेरे नीचे थोड़े से भिखारी बैठे रहते हैं। वे कभी कभी मेरे ऊपर थूक भी देते हैं।

एक बार एक मोटर मेरे से धक्का खा गई थी। मैं तब अन्धी हो गयी थी और मैं कुछ भी नहीं देख पायी। दो-तीन दिन के बाद कई आदमी आकर मुझे नयी बना गये। अब मैं सब बत्तियों से नयी बन गयी। उसके बाद से मुझे कुछ भी तकलीफ नहीं हुई।

पर जितने आदमी मैं दिन को देखती हूँ उतने मैं रात को नहीं देखती क्योंकि वे सब रात को बाहर आने से डरते हैं।

सुमित्रा
११ वर्ष

ध्वनी तथा प्रकाश का चमत्कार

ध्वनी व प्रकाश का प्रयोग करके मनुष्य ने, लाल किले में बीते हुए समय को जीवित करके हमारी आँखों के सामने खड़ा कर दिया है। इतिहास के पन्ने पलटने लगे--मुगल आक्रमण से लेकर आज तक की घटनायें हमारे सामने से गुजरते लगीं।

चारों ओर घोर अंधेरा और सामने एक महल था।

एकाएक सामने के महल पर रोशनी खिल उठी, और घोड़ों की टापें सुनाई दीं। हमें ऐसा लग रहा था कि जैसे वह पास आते जा रहे थे। सवार से सवार भिड़ गया। तलवारें झनकारने लगीं। चारों ओर आग बरसने लगी। हाहाकार से आकाश गूंज उठा।

मुगलों ने विजय पाई। मुगलों का राज्य हुआ। चारों ओर विलासिता फैल गयी। शेर-शायरी, गाना-बजाने से वातावरण परिपूर्ण हो उठा। घुंघरुओं की आवाज और मेंहदी की खुशबू से मुगल साम्राज्य महक उठा।

मुगलों का पतन हुआ।

अंग्रेजों का राज्य हुआ। गांधी जी ने भारत की स्वतन्त्रता के लिये आन्दोलन आरम्भ किये। देश के बड़े-बड़े नेता जवाहरलाल नेहरु, मोतीलाल नेहरु, लाला लाजपत राय, सरोजनी नायडू आदि उनके पीछे हो लिये। उनके नारों से सोया हुआ भारत जाग उठा।

इतने में आततायी के घोड़ों की टापें सुनाई दीं। देश के प्रेमियों पर लाठियों के प्रहार होने लगे। गोलियों की बौछार होने लगी। उनका अत्याचार बढ़ते-बढ़ते सहन की सीमा को पार कर गया।

गांधी जी ने 'देश छोड़ो' का आन्दोलन आरम्भ किया।

अतः १५ अगस्त १९४७ के शुभ दिन का आगमन हुआ। लाल किले पर राष्ट्र झंडा फैराया।

पंडित जवाहरलाल नेहरु भारत के पहले प्रधान मंत्री बने। लाल किले उनका भाषण हुआ। ऐसा लग रहा था जैसे वह साक्षात सामने खड़े हों।

राकेश
१० वर्ष

समुद्री जहाज से सैर

मेरे पिता व्यापारी जहाज के कप्तान हैं। हर वर्ष हम उनके साथ किसी दूसरे देश की यात्रा के लिए जाते हैं। इस वर्ष उनका जहाज अमेरिका जा रहा था। हम कलकत्ते से पहली मई को रवाना हुए। सबसे प्रथम हम पिनैन्ग पहुँचे। यह मलेशिया का एक बहुत सुन्दर बन्दरगाह है। वहाँ हमने महात्मा बुद्ध की एक मन्दिर में बहुत बड़ी प्रतिमा देखी। हमने एक मन्दिर देखा जिसमें साँप ही साँप थे। हम मलेशिया की राजधानी कुआलालमपुर भी देखने गये।

सिंगापुर हमारा जहाज तीन दिन रहा। यह जगह बहुत आधुनिक है। यहाँ पर अधिकतर लोग शौपिंग में ही समय बिताते हैं। चार दिन के पश्चात् हम होंगकोंग पहुँचे। यह एक बहुत सुन्दर जगह है। संसार की हर प्रकार की वस्तु यहाँ सस्ते दाम पर मिलती है। इसीलिए यह जगह खरीदने और बेचने वालों का स्वर्ग कहलाती है। हमने भी यहाँ जी भरकर चीजें खरीदीं।

इसके बाद हम फोरमूसा गए जिसको ताईवान भी कहते हैं। यहाँ की राजधानी ताईपी में हमने एक बहुत सुन्दर संग्रहालय देखा जिसमें कई हजार साल पुरानी चीन की चीजें थीं। इन सब स्थानों में रहने वाले अधिकतर चीनी ही हैं। अतः हमने सब जगह चीनी खाना खाया। इन सब स्थानों से, हमारे जहाज पर अमेरिका के लिये तरह तरह का सामान लादा गया जैसे कि—टीन, रबड़, लकड़ी, छोटी नावें इत्यादि।

अब हमारी १८ दिन की लम्बी यात्रा शुरू हुई। मौसम प्रायः अच्छा ही रहा। मेरा समय पढ़ाई और खेलने में बीता। परन्तु कभी कभी चारों ओर पानी देखकर मन उकता जाता था। एक दिन अचानक मौसम खराब हो गया और भारी तूफान आ गया जिससे कि जहाज बुरी तरह डोलने लगा। इन अट्ठारह दिनों के बाद जब हम लौस ऐंन्जलस पहुँचे हमारी खुशी का अन्त न था। सबसे पहले तो हमें पत्रों के मिलने की उत्सुकता थी।

मुझे काफी पत्र मिले और अपने देश का सब हाल मालूम हुआ। शाम होते ही हम बाहर घूमने गऐ। उस दिन हमने बाहर खाना खाया और मेले में गये। वहाँ मैंने एक छोटी सी मछली खेल में जीती।

दूसरे दिन हम डिसनीलेंड गये। वहाँ के सब दृश्यों का वर्णन करना कठिन है। वहाँ भिन्न भिन्न प्रकार के देखने योग्य स्थान हैं। मैंने भी बहुत सी चीजें देखीं, जैसे कि टिकि रूम, फैन्टसीलेन्ट टूमोरोलेन्ड इत्यादि।

दूसरे दिन हम मरीनलेन्ड गये। यहाँ पर विविध प्रकार की और अद्भुत मच्छलियाँ थीं। लोग इन्हें दूर दूर से देखने आते हैं।

लौस ऐन्जलस के बाद हम सैन फ्रैनसिसको गये। सैन फ्रैनसिसको में हमने गोल्डन-गेट-ब्रीज देखा। फिर हम एक मित्र का खेत देखने गये। सीएटल में हम एक मेला देखने गये, जहाँ कई प्रकार के झूले लगे हुए थे।

फिर हमारा जहाज वैनकूवर गया। यह शहर कनाडा में स्थित है। यहाँ भारत से बहुत लोग आये हुए हैं। हमने वहाँ एक सिक्खों का गुरद्वारा भी देखा।

यह गुरद्वारा संगमरमर का बना हुआ है। वैनकूवर से हम क्राफटन गये। यहाँ हम लगभग पचीस दिन रहे। क्राफटन से हम गैलवस्टन गये। वहाँ से हम बंगला देश के लिए पाँच हजार टन अन्न लेकर बम्बई की ओर चले। दो अक्टूबर १९७१ ई० को हम पहुँच गये।

अंकुर
१० वर्ष

डालडा का डिब्बा

वाह रे ! डालडा के डिब्बे। जहाँ नजर उठा के देखो वहीं दिखाई पड़ते हो। रसोईघर में तुम प्रधान हो। भला कोई ऐसी भी सब्जी है जो तुम्हारे बिना बन सकती है ?

हलवाई की दुकान पर भी तुम लड्डू तथा मिठाइयों के थाल के बीच में दिखाई पड़ते हो। लड्डू और मिठाई तो थाल में से साफ होते जाते हैं और तुम्हारा पेट पैसों से भरता जाता है।

माली तुम्हें सुन्दर रंगों से रंग कर एक सुन्दर फूल की तरह बाग में गमला बनाके रख देता है।

जैसे कक्षा में फूलदान उसकी शोभा बढ़ाता है, वैसे ही तुम कक्षा का सारा गंद अपने पेट में भर कर कक्षा को सुन्दर और साफ बनाते हो।

पुताई वाले भी तुम्हें इतनी ऊँची-ऊँची छतों पर लेकर चढ़े रहते हैं। वह तुममें सफेदी भरकर ऊपर ले जाते हैं।

सब्जी वालों की दूकान में भी तुम पानी से भरे विराजमान दिखाई देते हो। तुम मरती हुई सब्जियों को जीवनदान देते हो। जैसे ही तुम अपना पानी उनपर डालते हो, वह फूल की तरह खिल उठतीं है।

जमादार को देखो तो उसके एक हाथ में तुम विराजमान हो तो दूसरे हाथ में झाड़ू।

हे डालडा के टिन देव, तुम घर, बाहर सब जगह सर्व व्यापी हो। तुम्हें शत् शत् प्रणाम।

सोनिया
१० वर्ष

कविता

नदी के किनारे खेत था,
खेत में मुन्ना बैठा था।
बैठे बैठे भूख लगी,
दो दो गन्ने तोड़ लिए।
माली के बेटे ने देख लिया,
फूल छड़ी से मार दिया।
मुन्ना बोला 'मामा—मामा',
मामा बोले क्यों चोरी की ?

संजीव
९ वर्ष

मेरा मन्दिर

मैंने अपने घर में एक छोटा सा मन्दिर बना रखा है। उसमें मैंने श्रीकृष्ण, श्री राम, महावीर जी, और हनुमान जी की मूर्तियाँ सजाई हैं।

मेरी माँ प्रतिदिन इन मूर्तियों को पवित्र गंगा जल से स्नान कराती है। रोली-चन्दन का टीका लगाती हैं। धूप-दीप से आरती उतारती हैं। फिर भगवान को भोग लगाकर सबको प्रसाद देती हैं।

मैं प्रतिदिन सुबह शाम उनकी पूजा करता हूँ। अपने बाग से सुन्दर-सुन्दर फूल लाकर चढ़ाता हूँ। अपने छोटे से मन्दिर में मैं धूप-बत्ती और अगर-बत्ती भी जलाता हूँ।

दीपावली, रामनवमी, जन्माष्टमी और महावीर जयन्ती पर हम अपना मन्दिर बहुत सुन्दर ढंग से सजाते हैं। मुझे अपना मन्दिर बहुत प्रिय है।

राजेश
९ वर्ष

चुटकुले

एक आदमी एक लाला से—"साहब, मुझे आप अपने घर में नौकर रख लीजिए।"

लाला—'तुम कहीं दो तीन दिन में भाग तो नहीं जाओगे।"

आदमी—"नहीं साहब, मैं एक जगह तीन साल रह चुका हूँ।"

लाला—"कहाँ ?"

आदमी—"जेल में।"

एक बार एक औरत ने खाँसा। तो उसके पति ने उससे कहा है—"तुम्हारे गले के लिए कुछ ले लें।"

औरत—"हाँ, वह हार जो हमने अभी जौहरी की दुकान पर देखा था।"

अजेय
११ वर्ष

गाँधी जयन्ती की प्रार्थना सभा

दो अक्टूबर को गाँधी जयन्ती थी। इस दिन हमारे प्यारे बापू महात्मा गाँधी जी का जन्म दिन था। उस दिन प्रातः काल ८.३० बजे हम सब डाईनिंग हॉल के सामने सम्मिलित प्रार्थना के लिए इकठ्ठे हुए।

सर्व प्रथम 'वुडसीट्स' के एक छोटे लड़के ने गाँधी जी के चित्र को हारसिंगार के सफेद फूलों की माला पहनाई। इसके बाद श्री जोशी जी ने एक प्रार्थना सुनाई। हमने भी वह प्रार्थना दोहरायी। दूसरी प्रार्थना "He prayeth

well who loveth well" थी। इस प्रार्थना का आशय है कि सबसे बड़ा धर्मात्मा वही है, जो सबसे प्रेम करता है।

इसके बाद हमने "प्रेम मुदित मन से कहो" भजन गाया। भजन-रामधुन के साथ समाप्त किया। यह भजन गाँधी जी को बहुत अच्छा लगता था।

फिर प्रशान्त ने गाँधी जी के जीवन के बारे में बताया। उसने बताया कि उनका जन्म कहाँ हुआ, कहाँ शिक्षा पायी, और किस तरह सत्याग्रह करके उन्होंने अपने देश को आज़ाद किया। इसके बाद श्री जोशी जी ने 'हरिजन' शब्द का अर्थ समझाया।

अन्त में मिस भारती और कुछ बच्चों ने नरसी भगत का भजन "वैष्णव जन तो तेने कहिए" गाया। यह बहुत ही मधुर स्वरों में गाया गया था। इस भजन का मतलब है कि भगवान का भक्त वही है जो दूसरों के दुःख को समझता है। और उनको दूर करने की कोशिश करता है। इस भजन के साथ हमारी प्रार्थना सभा समाप्त हुई।

राजीव
९ वर्ष

चुटकुले

एक बार एक लड़का धूप में बैठा था। कहीं से एक लड़का निकल आया। उसने पूछा धूप में क्यों बैठे हो तो वह कहने लगा अपना पसीना सुखा रहा हूँ।

एक बार एक आदमी ने अपने लड़के से कहा जैसे रंग के बाल होते हैं वैसे ही रंग के कपड़े पहनने चाहिए। तभी लड़का बोला आपके तो बाल ही नहीं हैं तो आप क्या पहनेगें ?

गुलशन
१० वर्ष

वर्षा का दिन

प्रातः काल जब हम सो कर उठे तो देखा वर्षा हो रही थी। मैं झट से बिस्तर से कूद कर बाहर आया। मैं यह सोच कर बड़ा प्रसन्न था कि आज पी०टी० से बच जाएँगे।

मैंने खिड़की से झांक कर देखा तो चारों तरफ पानी ही पानी था। बाहर देखा तो सभी पेड़-पौधे हरे-भरे दिखाई देते थे। सारी सड़कें पानी से भर गई थीं। सारा मैदान पानी से भरा था। ऐसा लगता था कि मानो एक झील हो।

जब हम खाने के कमरे में पहुँचे तो देखा वहाँ भी पानी भरा हुआ था। मेज़ कुर्सियाँ सभी गीली थीं। हमारी बरसातियों और गीले गमबूटों से सभी जगह पानी-पानी हो गया था।

जब हम नाश्ता करके लौटे तो देखा कुछ लड़के पानी में कागज़ की नावें चला रहे थे। हमारी कक्षा से रिस्पना नदी दिखाई देती है। अधिक वर्षा होने के कारण उसमें बड़ी जोर से बाढ़ आ गई थी। कोई पार नहीं जा सकता था।

रात तक वर्षा होती रही और हम यह सोच कर सोने चले गये कि शायद कल वर्षा थम जाएगी और सूरज निकलेगा।

विजित
८ वर्ष

चुटकुला

एक आदमी को अपनी पत्नी के साथ दिल्ली जाना था। वह अपनी पत्नी के साथ स्टेशन पहुँचा। वहाँ उसने दो टिकट लिए। उसने अपनी पत्नी को उसका टिकट दे दिया।

जब मेल ट्रेन आयी तो वह चढ़ गया। जब ट्रेन चलने लगी तो उसने अपनी पत्नी से कहा कि यह तो मेल ट्रेन है। तुम फीमेल ट्रेन से आना।

अजेय
१० वर्ष

मेरा नगर तलवाड़ा

मेरे नगर का नाम तलवाड़ा हैं। वह पंजाब में है। वहाँ एक बांध भी बन रहा है। उसका नाम व्यास बांध है। वह बहुत बड़ा बांध है। वहाँ हजारों आदमी काम करते हैं। वहाँ बहुत तरह की मशीने हैं। जैसे क्रेन, डम्पर, बुलडोजर, आदि। उस बाँध में पाँच सुरंगे हैं। बाँध में बहुत से इन्जीनियर काम करते हैं। मेरे पिता भी वहाँ पर इन्जीनीयर हैं।

मेरे घर के पास एक क्लब है। उसे 'तलवाड़ा आफिसर क्लब' कहते हैं। वहाँ रात को कुछ लोग बैडमिन्टन खेलने जाते हैं और कुछ लोग टैनिस खेलने जाते हैं।

तलवाड़ा में दो स्कूल हैं। एक स्कूल का नाम मौडल स्कूल और दूसरे स्कूल का नाम हायर सेकेन्डरी स्कूल है। मौडल स्कूल छोटे लड़कों का है और हायर सेकेन्ड्री स्कूल में बड़े लड़के पढ़ते हैं।

हमारे शहर में एक विश्राम घर है। जिसे 'फील्ड होस्टल' कहते हैं। जो लोग बाहर से आते हैं वे फील्ड होस्टल में ठहरते हैं।

मेरे नगर में बड़े शहरों की तरह चहल-पहल नहीं हैं। फिर भी मुझे अपना नगर तलवाड़ा बहुत पसन्द है।

अमित राय चौधरी
१० वर्ष

यदि यह सम्भव होता

यदि यह सम्भव होता कि सोने की वर्षा हुआ करती तो मैं सम्राट बन जाता। मैं अपने ऊँचे-ऊँचे महल खड़े कर देता। अपने देश को समृद्ध बना देता। कोई गरीब न होता और सबके पास ऊँचे-ऊँचे महल होते।

यदि यह सम्भव होता कि वृक्षों पर रुपये लगे होते तो मैं बाजर से अपने मन पसन्द की वस्तुएँ ले आया करता। कितना मजा आता!

यदि यह सम्भव होता कि मैं मन चाहे रूप बदल सकता तो कितना मजा आता। कभी मैं गुलाब का फूल बनता और लोग मुझे प्यार से अपने कोटों में लगाते और गुलदस्तों में सजाते। कभी मैं झरना बनता और कल-कल करता पर्वतों और घाटियों की सैर करता। ग्रीष्म ऋतु में हवा के ठंडे झोंके बनता और सभी का मन खुश कर देता।

यदि यह सम्भव होता कि मैं बिना पढ़े पास हो जाया करता तो सभी विषयों में सौ-सौ नम्बर लाया करता। सभी मेरी प्रशंसा के पुल बाँध देते और मैं कितना आनन्दित होता। यदि सचमुच मन की बातें पूरी हो सकतीं तो क्या ही आनन्द आता।

संजीव

९ वर्ष

हमारा देश

हमारे देश का नाम भारत है। इसकी धरती बहुत बड़ी है। इसमें १८ प्रदेश हैं। इन सब की अलग-अलग भाषायें और अलग-अलग पहनावा है।

हमारे देश के उत्तर में बहुत बड़े पर्वत हैं। इन्हें हिमालय पर्वत कहते हैं। ये हमारे देश की रक्षा करते हैं। वहाँ खेती करना बहुत कठिन होता है। क्योंकि हर समय इन पर बर्फ पड़ी रहती है।

हमारे देश के तीन ओर समुद्र है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर तथा दक्षिण में भारत महासागर है।

कश्मीर एक बहुत सुन्दर जगह है। वहाँ कई दर्शनीय स्थान हैं। जैसे—नेहरू बाग, वुलर झील, चश्माशाही, गुलमर्ग, पैहलगाम आदि। कश्मीर जाकर मनुष्य इनकी सुन्दरता में खो जाता है।

राजस्थान भी हमारे देश का एक प्रदेश है जहाँ की जमीन बहुत रेतीली है। यहाँ ज्यादा खेती-बाड़ी नहीं हो सकती क्योंकि यहाँ पर पानी की कमी है। लोगों को पानी खरीदना पड़ता है। यहाँ पर कई देखने वाले नगर हैं। जैसे—जैपुर,

उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर आदि। राजस्थान हाथी-दांत का काम, मीनाकारी, बन्धनी साड़ी के लिए प्रसिद्ध है।

दक्षिण भारत की अपनी ही सुन्दरता है। यहाँ के मन्दिर बहुत प्रसिद्ध हैं। मदुरायी मन्दिर, रामेश्वर मन्दिर आदि देखने योग्य हैं। कन्या कुमारी का मन्दिर तो अद्वितीय है। इस मन्दिर में पार्वतीजी की आँखों में इतने असाधारण हीरे लगे हुए हैं कि उनकी चमक से आकर्षित होकर जहाज उससे टकरा जाते थे।

हमारे देश में कई महापुरुषों ने जन्म लिया है। जैसे गाँधी जी, स्वामी विवेकानन्द, जवाहरलाल नेहरू आदि। गाँधी जी एक ऐसे महापुरुष थे जिनकी महानता को सारे संसार ने माना है। उन्होंने लड़ने का एक नया तरीका चलाया था जो तोप, बन्दूक आदि से अधिक प्रभावशाली था। यह हथियार था अहिंसा। इसकी शक्ति को सारे संसार ने माना है।

स्वामी विवेकानन्द एक अनोखे सन्यासी थे। इन्होंने धर्म में राजनीति का पुट दिया था। इनका कहना था कि मनुष्य की सेवा भगवान की सबसे बड़ी भक्ति है। इन्होंने समाज सेवा तथा दलितों के उद्धार पर विशेष जोर दिया। इनका कहना था कि भूखे पेट भजन नहीं होता।

जवाहरलाल नेहरू भारत माता के सच्चे लाल थे। उन्होंने हमारे देश को उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया। आज उन्हीं के कारण हमारे देश की गिनती संसार के उन्नत देशों में होने लगी है।

राजीव
९ वर्ष

———

चुटकुले

१. लड़का—(माँ से) माँ, आज मैंने स्कूल में इतना अच्छा खेला कि रिकार्ड ही तोड़ दिया।

माँ—नालायक, तू और क्या करेगा, घर पर घड़ी तोड़ दी, और स्कूल में रिकार्ड।

सन्दीप
१० वर्ष

कुटचुला

२. (एक बार एक औरत बर्तन माँज रही होती है। उसका लड़का अन्दर आता है)

लड़का—माँ, बर्तन क्यों माँज रही हो ?

माँ—क्योंकि ये काले हो गये हैं।

लड़का—फिर पापा को क्यों नहीं माँजती, वे भी तो काले हैं।

३. (एक बार एक तरफ से लड़के चले आ रहे थे, और एक तरफ से लड़कियाँ। दोनों बड़ी मस्ती में थे)

लड़कियां—(लड़कों को) ये तो ऐसे चले आ रहे हैं, जैसे कि सड़क इनके बाप की है।

लड़के—नहीं साहब, सड़क तो तुम्हारे बाप की है, पर दहेज में हमें मिली है।

४. थानेदार (सिपाही से) —तुमने उस चोर को क्यों नहीं पकड़ा ?

सिपाही—जी, पकड़ने की कोशिश तो करी, पर वह एक ऐसे दरवाजे के अन्दर घुस गया जिसके आगे 'भीतर आना मना है।' लिखा था।

५. (एक बार एक कंजूस आदमी रेल से यात्रा कर रहा था। वह हर एक स्टेशन पर उतरता, आगे वाले स्टेशन का टिकट लेकर, फिर रेल गाड़ी पर चढ़ जाता।)

एक व्यक्ति—भाई, तुम ऐसा क्यों कर रहे हो ?

कंजूस आदमी—डाक्टर ने मुझे कह रखा है कि तुम्हारे को कोई खतरनाक रोग है, और तुम किसी भी समय मर सकते हो। इसलिए मैंने सोचा कि एक साथ सबके टिकट लेकर क्या करूँगा।

सन्दीप
१० वर्ष

———

मैं बड़ा होकर क्या बनूंगा

प्रत्येक विद्यार्थी किसी न किसी उद्देश्य को लेकर पढ़ता है या कोई कार्य सीखता है। कोई मास्टर बनना चाहता है तो कोई डाक्टर। कोई क्लर्क बनना पसन्द करता है तो कोई ऑफिसर। कुछ एक तो फिल्म कलाकार बनने में ही अपनी बढ़ाई समझते हैं। कई लोग लीडर बनने का स्वप्न देखते हैं।

लेकिन मुझे इनमें से कुछ भी बनना पसन्द नहीं। आजकल अपने देश के हालात को देख ऐसा दिल चाहता है कि मैं फौज में भर्ती हो जाऊँ। और तन मन धन से अपने देश की सेवा करूँ। और यदि दुश्मन मेरे देश की ओर देखे तो मैं उसकी आँखें ही फोड़ डालूँ।

फौजी जवान का जीवन एक सच्चा जीवन है। वह देश के लिये जीता है और देश के लिये ही मरता है।

मैं तो जब भी कभी किसी फौजी को उसकी वर्दी में देखता हूँ तो मेरा हृदय गद-गद हो उठता है। और मेरे दिल में भी यही अभिलाषा पैदा होती है। कि मैं भी बड़ा होकर केप्टन, मेजर और कर्नल बनूँ।

मुझे याद है कि श्री लालबहादुर शास्त्री जी भी फौजियों का सम्मान करते थे। इसलिए उन्होंने कहा था "जय जवान जय किसान।"

अनूप
९ वर्ष

तूफान में जहाज यात्रा

मैं एक बार बम्बई से लंदन जहाज पर जा रहा था।

यह मेरी पहली जहाज यात्रा थी। मुझे बहुत शौक था कि मैं मछलियाँ आदि देखूँ। थोड़ी दूर जाकर ही चारों ओर पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। जहाज पर किसी-किसी को उल्टी और चक्कर भी आ रहे थे। परन्तु मुझे कुछ नहीं हुआ, बल्कि मुझे तो बहुत अच्छा ही लग रहा था। सब तरफ नीला ही

नीला दिख रहा था। कभी-कभी पानी की लहरों के साथ कुछ मछलियाँ भी दिखाई देने लगती जो बहुत प्यारी लग रही थीं।

हमें चले चार पाँच दिन ही हुए थे कि हमने आकाश में काले-काले बादलों को घिरते देखा। जहाज के केप्टन ने कहा कि बहुत जोर से तूफान आने वाला है। परन्तु डरने की कोई बात नहीं है। कुछ ही देर बाद बहुत जोर से बिजली चमकने लगी और बहुत जोर से पानी बरसने लगा। बहुत ऊँची-ऊँची लहरें उठने लगीं जिनके कारण जहाज बहुत जोर से हिलने लगा। उस समय हम लोग खाने के कमरे में थे और खाना खा रहे थे। पर जहाज के हिलने के कारण प्लेटें इधर उधर जाने लगीं। कुछ नीचे गिर कर टूट गई। किसी के ऊपर चावल गिरा और किसी के ऊपर सूप। किसी के ऊपर करी का डोंगा ही उलट गया। मुझे अन्दर से तो बहुत घबराहट हो रही थी पर यह दृश्य देखकर मुझे हँसी भी बहुत आ रही थी। लहरें जहाज से ऊपर उठ रही थीं। कभी-कभी ऐसा लगने लगता था कि हम लोग नहीं बच सकेंगे और जहाज चकनाचूर हो जायेगा। मैं भी मन ही मन भगवान् का नाम लेने लगा।

कुछ घन्टे में तूफान शान्त हो गया और हम लोगों की जान में जान आई। इसके बाद हम सकुशल लन्दन पहुँच गये। मैं उस तूफान में की गई यात्रा को न भुला सकूँगा।

अमित कुमार
९ वर्ष

चुटकुले

दूधवाला--कल से दूध का भाव एक आने सेर बढ़ गया है।
खरीदार--क्यों
दूधवाला--क्योंकि कल से पानी का टैक्स बढ़ गया है।

अमित
१० वर्ष

२. अध्यापक--रमेश दिन में और बिजली में क्या अन्तर है।
रमेश--दिन का प्रकाश बिना पैसे के मिलता है और बिजली में पैसे लगते हैं।

३. सिपाही--पार्क में कुत्ते लाना मना है। क्या यह आपका कुत्ता है ?
सज्जन--नहीं यह मेरा कुत्ता नहीं है।
सिपाही--लेकिन यह आपके पीछे-पीछे जा रहा है।
सज्जन--मेरे पीछे तो आप भी आ रहे हैं।

४. बादशाह से बड़ा कौन होता है ? मास्टर साहब ने पूछा।
जी इक्का। लड़के ने उत्तर दिया।

५. पप्पू--तूने मेरी पुस्तक उठाई।
पिंकी--नहीं तो
पप्पू--खा अपनी कसम।
पिंकी--मुझे भूख नहीं है।

अमित
१० वर्ष

चुटकुले

माँ (बेटे से)--बेटी तुमने अभी तक चावल नहीं धोये ?
बेटी (माँ से)--आपने यह तो बताया नहीं कि सर्फ से धोने हैं या लाईफबोय सोप से।
पिता (बेटा से)--तुम्हारे मास्टर कहते हैं कि तुम पढ़ाई में बहुत तेज हो फिर तुम परीक्षा में क्यों फैल हो गये ?
बेटा (पिता से)--उन्होंने मेरे तेज दौड़ने के बारे में कहा होगा।

एक बार एक गंवार सिनेमा देखने गया, जब वहाँ पर बैठा तो बत्ती बन्द हो गई तो चिल्ला कर बोला--हम, लोग क्या उल्लू हैं जो अंधेरे में पिक्चर देखेंगे।

स्वामी प्यारा
(२६१)